पाठ 9. शरारत की सज़ा

पाठ का परिचय

टीनू बहुत ही शरारती लड़का था। लोग उसकी शरारतों से तंग आकर उसके पिता तथा शिक्षक के पास जाते। वे टीनू को समझाते पर वह नहीं मानता। एक दिन वह अपने दोस्त मोनू को लेकर घर से निकल पड़ा। लाल-लाल बेर खाने के इरादे से वे जंगल में पहुँच गए। कुछ दूरी पर खूब बेर लदी झाड़ियाँ दिखाई दीं। पर मुश्किल यह थी कि बीच में नाला था। नाले पर एक पुलिया बनी थी, जिसके पास एक बोर्ड पर लिखा था – यह पुलिया कमज़ोर है, इसपर न चढ़ें। मोनू ने उस पार जाने से इनकार कर दिया और वहाँ से चला गया। टीनू ने अपने दोस्त का कहना न माना और पुलिया की कच्ची सड़ी लकड़ी पर पैर रख नाला पार कर गया। जैसे ही वह नाले के उस पार पहुँचा सड़ी लकड़ी टूटकर पानी में गिर गई। टीनू थोड़ी देर तक लाल-लाल बेर खाता रहा। सर्दी का मौसम था। जल्दी ही अँधेरा छाने लगा। जंगल में सियार और उल्लू भी बोलने लगे। टीनू डर से काँपने लगा। रोते-रोते उसकी हिचकियाँ बँध गईं।
जब बहुत रात तक टीनू घर नहीं आया तो उसके पिता उसे ढूँढ़ने निकले। सारे गाँव में टीनू का कहीं पता न चला। जब टीनू के पिता मोनू के घर गए तो उसने डरते हुए सारी बात बताई। टीनू के पिता सभी गाँववालों को लेकर उस टूटी पुलिया के पास पहुँचे। वहाँ पहुँच पिता ने टीनू को आवाज़ लगाई। टीनू ने अपने पिता की आवाज़ को पहचाना। उसने रोते हुए अपने पिता को बताया कि वह यहाँ है। एक आदमी तैरकर नाले के उस पार गया और टीनू को कंधे पर बैठाकर इस ओर ले आया। टीनू को अपनी शरारत का आज अच्छा सबक मिल गया था।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

शरारत करना बुरी बात नहीं है लेकिन हर काम एक सीमा में रहकर किया जाना चाहिए। बच्चों को अपना भविष्य सँवारने के लिए अपने माता-पिता का तो कहना मानना ही चाहिए, साथ-ही-साथ समझदारी को भी जीवन में अपनाना चाहिए।

महत्वपूर्ण चर्चा

हर बच्चा शरारत करता है। सबकी शरारतें अलग-अलग होती हैं।

- सभी बच्चों से जानें कि वे किस तरह की शरारतें करते हैं?
- क्या कभी उन्हें शरारत करने पर डाँट पड़ी है?
- जीवन की ऐसी कोई घटना सुनाएँ जब शरारत करते पकड़े गए और खूब मज़ा आया।